दखल

संसद यानी लोकतंत्र का सर्वोच्च मंदिर

आज से संसद का मानसून सत्र प्रारंभ होने जा रहा है और उम्मीद है कि इस सत्र हमारी यह सर्वोच्च पंचायत न सिर्फ काम करेगी, बल्कि संसद को लेकर जनता में जो धारणा बनती चली जा रही है, उसे भी दूर करेगी। माननीय सांसद साबित करेंगे कि संसद एक मंदिर है।

जब यह पंक्तियां पढ़ी जा रही होंगी, तब संसद का मानसून सत्र शुरू होने वाला होगा। इस सर्वोच्च पंचायत की उम्र 70 वर्ष होने जा रही है। जितनी देश के लोकतंत्र की उम्र हो गई है, उतनी ही हमारी संसद की भी, पर अब तक इसे जितना परिपक्व हो जाना चाहिए था, वह हुई नहीं है। सत्य तो यह है कि शुरुआत में संसद जिस तरह काम करती थी, वह बहुत ही बढ़िया हुआ करता था, लेकिन गुजरते समय के साथ उसके कामकाज में गिरावट आती चली जा रही है। कभी-कभी तो लगता है कि अब संसद का महत्व प्रतीकात्मक ही रह गया है। बीते तीन-साढ़े तीन दशक में यह बात कम ही देखने को मिली, जब संसद ने देश की किसी समस्या का समाधान किया हो। मसलन-संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के दूसरे कार्यकाल में महंगाई पर संसद में पांच बार बहस हुई थी, लेकिन वह इस समस्या का समाधान नहीं कर पाई थी। हां, पूर्ण बहुमत की सरकार यदि कोई काम करना चाहती है, तब वह हो जाता है। जैसे-वर्तमान केंद्र सरकार वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू करना चाहती थी, तो उसने इसका रास्ता भी निकाल ही लिया है। इसके विपरीत, यही सरकार भूमि अधिग्रहण कानून में संशोधन कराने में पूरी तरह से विफल हो गई थी।

भारतीय संसद की जो संरचना है, उसमें उसका काम सरकारों की इच्छा पर निर्भर नहीं होना चाहिए। बेशक, संसदीय लोकतंत्र में सरकारों की भी अपनी भूमिका होती है। सरकार का मतलब है कार्यपालिका, जो संसद को विश्वास में लेकर ही कोई काम कर सकती है। मगर चलन यह चल पड़ा है कि काम पहले कर दिया जाता है, संसद को भरोसे में बाद में लिया जाता है। इतना जरूरी कोई काम नहीं होता, जो संसद को भरोसे में लिए बिना करने की जरूरत पड़े। अगर ऐसा कोई जरूरी काम है तो भारतीय संविधान में संसद का विशेष सत्र बुलाने का भी प्रावधान है। अत्यंत खास परिस्थितियों में सरकार अध्यादेश भी जारी कर सकती है, नीतिगत निर्णय भी ले सकती है। मगर कार्यपालिका के यह दोनों अधिकार विधायिका (संसद) पर भारी नहीं पड़ने चाहिए। लेकिन इंदिरा जी के जमाने से प्रारंभ हुई यह गलत परंपरा अब भी चल रही है। जो निर्णय जनता को जितना अधिक प्रभावित करता है, कार्यपालिका उसे ही अपना नीतिगत निर्णय बना लेती है। जैसे-मनमोहन सिंह सरकार ने नागरिक से यूपीसी के जरिए डाक भेजने का अधिकार छीन लिया था, संसद को विश्वास में लिए बिना ही। वर्तमान केंद्र सरकार ने भी विमुद्रीकरण से पहले संसद को भरोसे में कहां लिया था। हम यह निष्कर्ष निकालने के झंझट में नहीं पड़ेंगे कि नोटबंदी सही थी या गलत। लेकिन उससे पहले संसद को भरोसे में लिया जाना चाहिए था। अगर पहले ऐसा करने में कोई दिक्कत थी, तब विमुद्रीकरण के दूसरे ही दिन संसद का विशेष सत्र बुलाकर भी उसे भरोसे में लिया जा सकता था। जब कार्यकालिका जनता के व्यापक हितों से जुड़े निर्णय भी अपने आप ले लेगी, तो संसद की सर्वोच्चता प्रभावित होगी, वह प्रतीक में भी बदल जाएगी।

इसके अलावा, संसदीय कार्य-व्यवहार में और भी बहुत सारी गड़बड़ियां दिखने लगी हैं। हमने संसद के पूरे सत्रों को इसमें भी जाया होते देखा है कि किसी विषय पर चर्चा किस नियम के तहत कराई जाए, किसके तहत नहीं। विपक्ष किसी और नियम के तहत चर्चा कराना चाहता था, जबकि सत्तापक्ष किसी और के तहत एवं दोनों में सहमति के अभाव में संसद का बहुत सारा समय, कभी-कभी तो पूरा सत्र जाया हो गया। फिर, हमारी संसद की विधेयक पारित करने की रफ्तार भी बहुत धीमी है। मोटेतौर पर यह आंकड़ा 65 से 70 फीसदी के बीच बैठता है। मतलब, संसद के दोनों ही सदनों में यदि सौ विधेयक विचारार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं तो इनमें से 65 या 70 विधेयक ही पारित होते हैं। यह भी चिंताजनक है कि बहुत सारे विधेयक ध्वनिमत से पारित हो जाते हैं। प्रश्नकाल का महत्व कम कर दिया गया है और कभी-कभी तो सदन में यह स्थिति होती है कि न तो वहां प्रश्न पूछने वाला सांसद होता है, तो न ही उत्तर देने वाला मंत्री भी। अभी पिछले ही सत्र में राज्यसभा के सभापति हामिद अंसारी ने प्रश्न के उत्तर देने वाले मंत्रियों की गैर-हाजिरी पर नाराजगी जताई थी। वे इसलिए भी गुस्सा हो गए थे कि उत्तर का दिन निर्धारित होने के बावजूद उसी दिन सदन से प्रश्न पूछने वाले तीनों के तीनों सांसद भी नदारद ही थे। इस तरह ऐसी अनेक समस्याएं हैं, जिनसे हमारी संसद ग्रस्त है।

विधेयकों-विषयों पर पार्टी लाइन के अंदर रहकर बहस करना, मतदान के समय सांसदों के विवेक पर भरोसा न करते हुए उनके लिए व्हिप (निर्देश) जारी कर देना, विधेयकों को जान-बूझकर न केवल अटकाना, बल्कि कभी-कभी उनकी प्रतियां तक फाड़ देना, ऐसी समस्याएं हैं, जिनसे संसद प्रायः हर सत्र में दो-चार होती है। इसीलिए देश में यह धारणा बनती जा रही है कि माननीय सांसद केवल अपने वेतन-भत्ते, सुविधाएं बढ़ाने के लिए एकमत होते हैं, देश से जुड़े हुए विषयों पर नहीं। संसद का आज से प्रारंभ हो रहा मानसून सत्र इस धारणा को समाप्त करने का काम करेगा, आशा तो यही है। हां, जरूरी नहीं कि हमारी उम्मीद पूरी हो ही जाएगी।

एस. रविकुमार
(अधिवक्ता, उत्तरप्रदेश हाईकोर्ट)

विचार

उज्ज्वला की पूरी हुई आधी यात्रा

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने अपना आधा सफर पूरा कर लिया है। यह सफर डेढ़ वर्ष में पूरा होना चाहिए था, पर उससे कम समय में हो गया। इसका अर्थ यह है कि निगरानी तगड़ी हो तो योजनाएं सफल होती हैं।

कोलकाता में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा एक गरीब महिला को 2.5 करोड़वां एलपीजी कनेक्शन देने के साथ ही प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का आधा सफर पूरा हो चुका है। गौरतलब है कि गरीबों को पांच करोड़ मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन देने की यह बड़ी योजना प्रधानमंत्री ने एक मई-2016 को उत्तरप्रदेश के बलिया से प्रारंभ की थी। उसी समय मोदी ने यह घोषणा भी की थी कि पांच करोड़ गैस कनेक्शन सिर्फ तीन साल में वितरित कर दिए जाएंगे। इसलिए यह सवाल भी उठा था कि कम अवधि में यह काम होगा कैसे? कारण, हमारे देश में सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन बहुत कठिन होता है। सबसे बड़ी चुनौती लाभार्थियों के चयन की होती है। यह चुनौती कितनी तगड़ी होती है, इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि शायद ही कोई राज्य ऐसा होगा, जहां अमीरों के गरीबी रेखा वाले राशन कार्ड नहीं बने होंगे। यहां कार्ड का तो बस उदाहरण दिया गया है, सच तो यह है कि गरीबों के लिए बनने वाली प्रायः सभी योजनाओं का ऐसा ही हश्र होता है। जब हितग्राहियों के चयन में ही दंद-फंद हो जाता है, तो योजनाओं का लाभ उन तक कैसे पहुंच पाता होगा, समझा जा सकता है।

फिर, उज्ज्वला योजना चूंकि केंद्र सरकार की है, इसलिए इसे लेकर यह सवाल भी उठ रहा था कि विपक्ष शासित राज्य सरकारें कहीं इस पर पानी तो नहीं फेर देंगी? यह प्रश्न इसलिए उठ रहा था कि कुछ राज्य सरकारों ने इसे चुनावी योजना बताया था। वस्तुतः उज्ज्वला योजना की शुरुआत उत्तरप्रदेश समेत पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की सरगर्मियां प्रारंभ होने से कुछ ही पहले हुई थी। मगर अब सभी सवालों के उत्तर मिल चुके हैं। राष्ट्रपति ने ढाई करोड़वां गैस कनेक्शन 15 जुलाई को दिया। यानी, एक वर्ष और डेढ़ माह में उज्ज्वला योजना ने अपनी आधी यात्रा पूरी कर ली है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि जो काम उसे डेढ़ वर्ष में पूरा करना था, वह उसने पहले ही कर लिया। इस तरह, सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की एक उम्दा मिसाल बन गई है, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पांच करोड़ गैस कनेक्शन वितरण का लक्ष्य भी यह योजना समय से पहले छू लेगी।

इसका सबसे सकारात्मक पक्ष यह है कि लाभार्थियों का प्रशासनिक तंत्र पर भरोसा बढ़ा होगा। कौन नहीं जानता कि हम अपने प्रशासन को अकर्मण्य ही मानते हैं। इसलिए उस पर कम ही भरोसा करते हैं, जिसे उज्ज्वला योजना ने बढ़ाया है। जनता की समझ में यही आया है कि सरकार यदि निगरानी करे तो योजनाओं पर अमल हो सकता है। इधर, इस योजना की सफलता में उनका भी कम योगदान नहीं है, जिन आर्थिक रूप से सक्षम लोगों ने प्रधानमंत्री की अपील पर अपनी गैस सब्सिडी छोड़ दी है। इन लोगों ने सिर्फ गरीबों की मदद ही नहीं की है, बल्कि गरीब महिलाओं को धुएं के जहर से बचाकर उनकी स्वास्थ्य रक्षा में भी अपना योगदान दिया है। इससे प्रदूषण पर भी कम हुआ होगा। यानी, उज्ज्वला योजना बढ़िया तो है ही, उसका क्रियान्वयन भी ठीक से हो रहा है।

मुद्दा

खारे पानी को मीठे में बदलना होगा

पृथ्वी पर पीने योग्य पानी केवल तीन फीसदी है, क्योंकि 97 फीसदी जो पानी जमीन के नीचे या महासागरों में है, वह खारा होने के कारण पीने योग्य नहीं है। पेयजल संकट से हमारा देश भी जूझ रहा है। इसलिए समुद्र के खारे पानी को मीठे पानी में बदलने की तकनीक शीघ्र ही देश में ईजाद करनी होगी। अभी यह तकनीक दुनिया में केवल इस्राइल के पास है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस्राइल यात्रा के दौरान उन्हें हमने वहां के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ समुद्र में एक विशिष्ट जीप में बैठे देखा होगा। यह जीप समुद्र के पानी में चलकर समुद्री खारे जल को मीठे पेयजल में बदलने का अचरज भरा काम कर रही थी। गंगाजल से भी उज्ज्वल और शुद्ध उस जल को दोनों ही प्रधानमंत्रियों ने पिया भी। पूरी दुनिया समुद्र के पानी को मीठे जल में परिवर्तित करने की तकनीक की खोज में लगी है, लेकिन इस्राइल के अलावा अन्य किसी देश को इस तकनीक के आविष्कार में अभी सफलता नहीं मिली।

हालांकि, भारत भी इस प्रौद्योगिकी की खोज में लगा है, लेकिन असफल ही रहा। इस्राइल से सामरिक और जल संरक्षण के क्षेत्र में भारत ने जो सात समझौते किए हैं, उनमें भी इस तकनीक का हस्तांतरण शामिल नहीं है। हालांकि, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों ने समुद्र के पानी को मीठे पानी में तब्दील करने का दावा किया है, लेकिन इस पानी का अब तक बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उत्पादन संभव नहीं हो सका है। प्राचीन काल में समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाए जाने के प्रयास लंका के सम्राट रावण ने किए थे, पर वे भी विफल रहे थे।

बहरहाल, दुनिया के आधुनिक वैज्ञानिक लगातार इन कोशिशों में लगे हैं कि समुद्र के खारे पानी को पीने के लायक बना लिया जाए, जिससे भविष्य -दृष्टाओं द्वारा इस सदी में पानी के लिए तीसरे विश्वयुद्ध की जो आशंकाएं जताई जा रही हैं, उन पर पूर्ण विराम लग सके। भारत में खारा पानी मीठे में कब तब्दील होगा, इस बारे में फिलहाल कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता है, लेकिन मुंबई और समुद्र तटीय महानगरों में गहराई से जल दोहन की वर्तमान स्थिति अनवरत रही, तो कई महानगरों का पीने योग्य पानी जरूर आने वाले एक-दो दशकों में खारा हो जाएगा।

मीठे पानी में खारे जल का विलय एक आसन्न खतरा है, जिस पर विचार किया जाना जरूरी है। दुनिया में इस्राइल इकलौता देश है, जिसने समुद्र के खारे पानी को पीने लायक बनाने की तकनीक ईजाद की है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक 2050 तक जब विश्व की 40 फीसदी आबादी जलसंकट भोग रही होगी, तब भी इस्राइल में पीने के पानी का संकट नहीं होगा। इस्राइल न सिर्फ हथियारों, बल्कि पानी के मामले में भी महाशक्ति बनकर उभरा है। प्रधानमंत्री ने तेल अवीव के डोर तट पर समुद्र के पानी को तत्काल पीने लायक बनाने वाले संयंत्र का अवलोकन किया। यह संयंत्र 'गेलमोबाइल वाटर फिल्ट्रेशन प्लांट' कहलाता है। यह चलित फिल्टर प्लांट है। नेतन्याहू इसे 'फ्यूचर जीप' कहते हैं। वहीं, मोदी ने इसे बेजोड़ वाहन बताते हुए कहा था कि प्राकृतिक आपदा के वक्त यह संयंत्र बेहद उपयोगी हो सकता है।

उधर, ब्रिटेन की मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के एक दल ने भी ग्रैफीन की एक ऐसी चलनी विकसित की है, जो समंदर के खारे पानी से नमक को अलग कर देती है। ग्रैफीन ग्रैफाइट की पतली पट्टी जैसा तत्व है, जिसे प्रयोगशाला में आसानी से तैयार किया जा सकता है। ग्रैफीन ऑक्साइड से निर्मित यह छलनी समुद्र के पानी से नमक अलग करने में सक्षम है। लेकिन इससे उत्पादन बहुत महंगा पड़ता है। वैज्ञानिकों के इस दल का नेतृत्व डॉ. राहुल नायर ने किया है। इस आविष्कार से संबंधित शोध को साइंस जर्नल 'नेचर नैनो टेक्नोलॉजी' ने छापा है।

इधर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने उपरोक्त तकनीक की तुलना में बेहद सस्ती तकनीक से खारे पानी को मीठे पानी में बदलने का दावा किया है। इसे 'इंटरडिस्पिलनरी नैनो टेक्नोलॉजी सेंटर' के निदेशक प्रो. अबसार अहमद ने अंजाम दिया है। उन्होंने इंडोफिटिक फंजाई (फंगस) से पोरस नैनो सामग्री तैयार की, जिसकी माप नैनो मीटर से होती है। ये फंगस खाने-पीने की वस्तुओं में आसानी से मिल जाते हैं। अहमद बताते हैं कि फंगस के मेमरेन (बायोमास) में पहले छेद किया गया। छेद का व्यास नैनो मीटर से तय किया गया। छेद युक्त इन नैनो पार्टिकल्स (सूक्ष्म कण) से केवल पानी ही रिस कर बाहर निकला है, अन्य लवणयुक्त कण फंगस के ऊपर ही रहे जाते हैं।

इस पानी को साफ करने के लिए विशेष प्रकार का फिल्टर बनाया जाएगा, जिसमें नैनो सामग्री डाली जाएगी। जब इस खारे पानी को यहां से प्रवाहित किया जाएगा, तो वह शुद्ध होकर निकलेगा। पृथ्वी का 71 प्रतिशत हिस्सा पानी में डूबा हुआ है। 1.6 प्रतिशत पानी धरती के नीचे है, तो 0.001 फीसदी वाष्प और बादलों के रूप में। पृथ्वी की सतह पर जो पानी है, उसका 97 प्रतिशत सागरों और महासागरों में है, जो नमकीन होने के कारण पीने लायक नहीं है। कुल उपलब्ध पानी में से केवल तीन प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है। इसमें से 2.4 फीसदी पानी हिमखंडों के रूप में उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा हुआ है।

बहरहाल, भूगर्भीय जल भंडारों के बेइंतहा दोहन और शुद्ध पानी के प्राकृतिक भंडारों के ऊपर बहुमंजिला इमारतें खड़ी किए जाने से मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, गोवा, दमन, तिरुअनंतपुरम, बापी, पुरी, एर्नाकुलम, कोझीकोड़, रत्नागिरी व विजयनगरम् जैसे नगरों का भूजल समाप्त होने की स्थिति में है। इनमें सबसे बुरा हाल मुंबई का है। वहां जिस तेजी से जल का दोहन किया जा रहा है, उससे लगता है कि 2030 तक मुंबई के मीठे पानी के जल भंडार रीत जाएंगे। मुंबई में गहराई से जल दोहन के लिए टैंकर लॉबी को दोषी माना जा रहा है। ये पम्पों से पानी खींचकर औद्योगिक इकाइयों को बेचा करते हैं।

मुंबई के कई पुराने कुंओं का पानी सूख गया है। इससे अनुमान होता है कि वहां जलस्तर कितना नीचे चला गया है। जल स्तर गिरने का सबसे बड़ा कारण बड़े पैमाने पर ऊंची इमारतें बनाए जाने के लिए खोदी गई गहरी बुनियादें हैं। इस सिलसिले में मुंबई में पानी के भीतरी भंडारों का अध्ययन कर चुके भूगर्भ शास्त्री डॉ. ऋषिकेश सामंत का कहना है-'नई इमारतों की मंजूरी देने से पहले भूगर्भ जलस्तर की पड़ताल की जाए और यदि ऐसे स्थलों पर पीने योग्य पर्याप्त जल है तो वहां ऊंची अट्टालिकाएं खड़ी करने की इजाजत बिलकुल नहीं दी जानी चाहिए।'

समुद्र का पानी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसमें पाए जाने वाले विभिन्न तत्वों को पचाने की क्षमता शरीर में नहीं होती है। ये तत्व मनुष्य के अंदर ऐसी बीमारियां पैदा करते हैं, जो भारत में लाइलाज हैं। वर्ष-1994 में लिए गए उपग्रह चित्रों से गहरे भूजल भंडारों का पता चला था, लेकिन इनका उचित संरक्षण नहीं किए जाने से ये लगातार रीतते चले जा रहे है। मुंबई जैसा हाल ही अन्य महानगरों का है। इसमें बदलाव भी आता नहीं दिख रहा है। अतः भारत के लिए जरूरी है कि वह समुद्री जल को मीठे पानी में बदलने की प्रौद्योगिकी या तो स्वयं विकसित करे या इस्राइल जैसे देशों से हासिल करे।

प्रमोद भार्गव
(वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तंभकार)

ट्विटर

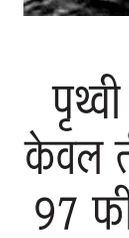

सरकार की कोशिश संसद के मानसून सत्र को रचनात्मक बनाने की है। भरोसा है कि प्रतिपक्ष का साथ भी हमें मिलेगा। न सिर्फ लंबित विधेयक ही पारित होंगे, संसद में सभी मसलों पर चर्चा भी होगी।

विजय गोयल, केंद्रीय मंत्री

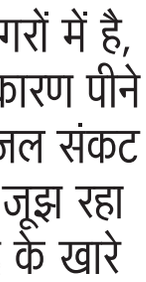

संसद सत्र के संचालन में प्रतिपक्ष केंद्र सरकार के साथ है। हम चाहते हैं कि न सिर्फ संसद चले, बल्कि तमाम मामलों पर सरकार भी सदन के समक्ष अपना पक्ष रखे। प्रश्न तो अवश्य पूछे जाएंगे।

सचिन पायलट, कांग्रेस नेता

सत्यार्थ

बाबा आमटे की सेवाभावना

तेज बारिश हो रही थी। उसी में एक कुष्ठ रोगी खुले में असहाय पड़ा कराह रहा था। उसकी सहायता करने वाला वहां कोई नहीं था। तभी वहां से गुजरने वाले एक व्यक्ति की उस रोगी पर नजर पड़ी। वह उसकी दशा देखकर अंदर तक हिल गया। इस घटना ने उसे इतना प्रभावित किया कि उसने उसी क्षण से कुष्ठ रोगियों की सेवा करने का व्रत ले लिया।

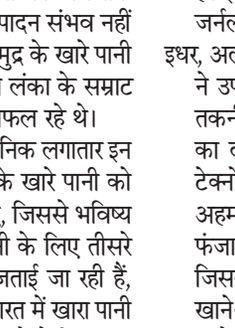

उसने फौरन उस रोगी को उठाया और अपने घर की ओर चल पड़ा। वह नहीं जानता था कि कुष्ठ रोग कैसे होता है और उसका उपचार कैसे किया जाता है। उसी दिन से वह कुष्ठ रोग और उसके उपचार के अध्ययन में जुट गया। उसने महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के घने जंगलों में आनंदवन नामक एक आश्रम की स्थापना की, ताकि इन रोगियों का उपचार ही नहीं, उनका पुनर्वास भी किया जा सके। वे चाहते थे कि कुष्ठ रोग का शीघ्र ही कोई अच्छा उपचार मिल जाए। इसके लिए वे लगातार प्रयोग करते रहे। एक बार तो उन्होंने कुष्ठ के बैक्टीरिया को चिकित्सकीय प्रयोग के लिए स्वयं अपने शरीर में ही प्रविष्ट करा लिया, ताकि शोध करके उपचार में उचित सफलता हासिल हो सके। कुष्ठ रोगियों के इस महान सेवक का नाम था, मुरलीधर देवीदास आमटे, जिन्हें लोग बाबा आमटे कहते थे। महात्मा गांधीजी ने कुष्ठ रोग के क्षेत्र में अथक प्रयासों के लिए बाबा आमटे को अभय साधक का नाम दिया था। उनकी महानता मात्र इस बात में नहीं है कि उन्होंने अपना सारा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा एवं उनके पुनर्वास में लगा दिया, बल्कि इस बात में है कि इस रोग का आसान उपचार खोजने के लिए वे अपने प्राणों को संकट में डालने से भी नहीं हिचकिचाए। बाबा आमटे सचमुच ही अभय थे। सेवा का उनका उदाहरण अनुकरणीय है।

सीताराम गुप्त

चिट्ठियां

केंद्रीय खेल मंत्री का बयान सराहना के योग्य

बेवजह खर्च करने के आरोप सरकारों पर लगते रहते हैं, लेकिन इसे लेकर कई विभाग सजग भी रहते हैं। खेल मंत्रालय उनमें से एक है। सीआईआई स्कोर कार्ड 2017 कार्यक्रम में केंद्रीय खेल मंत्री विजय गोयल द्वारा दिया गया वह बयान सही है, जिसमें उन्होंने आगे से खेल से जुड़ी गतिविधियों की प्रेस कांफ्रेंस पांच सितारा होटलों में कराने के बजाय स्टेडियमों में कराने की बात कही है। उनकी यह सोच काबिल-ए-तारीफ है। बाकी मंत्रालयों को भी उनसे सीख लेनी चाहिए।

पर्यावरण के प्रति अपना कर्तव्य समझे इंसान

यह चिंता का विषय है कि आने वाले कुछ वर्षों में तीन चौथाई जीव प्रजातियां विश्व से गायब हो जाएंगी। प्रकृति में बढ़ रहा असंतुलन इन सबके लिए जिम्मेदार है व असंतुलन मनुष्य की गलतियों के कारण बढ़ रहा है। हालांकि, तथ्य यह भी है कि जो चीज जन्म लेती है, वह नष्ट भी होती ही है। यह बात सिर्फ जीवधारियों पर ही लागू नहीं होती, बल्कि निर्जीवों पर भी लागू होती है एवं इसकी अपवाद पृथ्वी भी नहीं है। वह भी कभी न कभी खत्म होगी, मगर अभी तो उसे बचाना ही होगा।

दूर करनी होगी शिक्षा व्यवस्था की असमानता

अब शिक्षा व्यापार बन चुकी है। जो बच्चे संपन्न घर के होते हैं, उन्हें अच्छी शिक्षा मिल जाती है। सरकारी स्कूलों के छात्र सुख-सुविधाओं से वंचित होकर 12वीं पास कर लेते हैं, तो भी उनकी बराबरी प्राइवेट स्कूल के विद्यार्थियों से नहीं होती है। प्राइवेट स्कूलों के छात्रों को कॉलेजों में आसानी से प्रवेश मिल जाता है, वहीं सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी इनमें प्रवेश से वंचित रह जाते हैं। जब तक गरीबों की शिक्षा अलग, अमीरों की अलग रहेगी, देश का समतामूलक विकास नहीं होगा।

घर में शौचालय हर महिला का अधिकार

भूमि पेडनेकर

एक्ट्रेस भूमि पेंडनेकर की फिल्म टॉयलेट एक प्रेमकथा में अहम भूमिका है। भूमि कहती हैं, टॉयलेट एक प्रेमकथा मुख्य रूप से एक प्रेमकथा है जोकि एक महान प्रेम प्रसंग है दो सीधे सादे भूमिकाओं के बीच। आपको अंदेशा भी नहीं होगा कि इस प्रेम कहानी के माध्यम से कितना बड़ा संदेश दिया जा रहा है। मुझे ऐसी भावना आ रही है कि यह फिल्म समाज में एक बड़ा बदलाव लाएगी। इस फिल्म में महिलाओं को यह बताने का प्रयास किया गया है कि विवाह के समय अपने सम्मान से कम किसी भी चीज पर समझौता मत करिएंगा। मेरे ख्याल से घर में शौचालय होना आपका अधिकार है और आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह आपको मिले ही। इस फिल्म में अक्षय कुमार की मुख्य भूमिका है। फिल्म में यह दिखाया गया है कि जैसे ही अक्षय कुमार की पत्नी विवाह करके घर आती है तो उन्हें पता चलता है कि घर में शौचालय नहीं है और वह वापस अपने मायके चली जाती है। फिल्म टॉयलेट एक प्रेम कथा 11 अगस्त को रिलीज़ हो रही है। फिल्म का निर्देशन श्रीनारायण सिंह ने किया है।

बॉलीवुड में धूम मचाने को तैयार हैं सारा अली खान

बॉलीवुड में सैफ अली खान की बेटी सारा अली खान धूम मचाने को तैयार हैं। जल्द वह बॉलीवुड में डेब्यू करने वाली हैं । करीना कपूर की मानें तो उन्हें विश्वास है कि सारा अली खान बॉलीवुड में अपने डेब्यू से सभी को प्रभावित करने जा रही हैं। सारा अभिषेक कपूर के निर्देशन में बनने वाली फिल्म 'केदारनाथ' से बॉलीवुड में अपने अभिनय पारी की शुरुआत कर रही हैं। वह सैफ अली खान और उनकी पहली पत्नी अमृता सिंह की बेटी हैं। सारा की बॉलीवुड में एंट्री पर करीना ने कहा, मुझे पूरा यकीन है कि वह काफी क्षमतावान होने जा रही है । यह उसके जीन में है । वह काफी सुंदर है । मुझे विश्वास है कि वह अपनी सुंदरता और टैलेंट से इंडस्ट्री में धूम मचाने जा रही है। इस फिल्म में सारा सुशांत सिंह राजपूत के साथ काम करेंगी । पहले कहा गया था कि वे करण जौहर की फिल्म स्टूडेंट्स ऑफ द ईयर 2 से डेब्यू करेंगी। इसके बाद उनकी ऋतिक रोशन और सलमान खान के बहनोई आयुष शर्मा के साथ फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने की खबरों ने जोर पकड़ा था। हाल ही में अभिषेक कपूर अपनी फिल्म केदारनाथ की शुरुआत के लिए सारा अली खान के साथ उत्तराखंड में नजर आए थे।

अक्षय खन्ना चाहते हैं श्रीदेवी के साथ दोबारा काम करना

बॉलीवुड एक्टर अक्षय खन्ना एक्ट्रैस श्रीदेवी के साथ वह एक बार फिर काम करना चाहते हैं। श्रीदेवी के बारे में अक्षय ने कहा, वह शानदार हैं और वह किसी भी अन्य कलाकार जैसा व्यवहार करती हैं। उनकी तरफ से कोई दबाव नहीं है। उनके साथ काम करना बेहतरीन रहा। यह पूछे जाने पर कि क्या वह उनके साथ दोबारा काम करना पसंद करेंगे? इस पर उन्होंने कहा, हां, जरूर अगर मुझे वह मौका दें तो। श्रीदेवी के पति बोनी कपूर द्वारा निर्मित 'मॉम' को दर्शकों और आलोचकों से अच्छी सराहना प्राप्त हुई है और इससे अक्षय अच्छा महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता था कि यह बॉक्स ऑफिस पर कैसी चलेगी।

उड़ता पंजाब से बॉलीवुड में छाए दलजीत

बॉलीवुड के तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय भारतीय फिल्म अकादमी पुरस्कार (आईफा) समारोह में आज पंजाब के मशहूर सिंगर और एक्टर दलजीत दोसांझ को बेस्ट डेब्यू एक्टर (पुरुष) का पुरस्कार दिया गया। पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में नाम कमाने के बाद उड़ता पंजाब से बॉलीवुड में एंट्री करने वाले दलजीत ने बेस्ट डेब्यू एक्टर (पुरुष) का खिताब अपने नाम किया। इस फिल्म में दलजीत ने इक कुड़ी गाना गाकर लोगों के दिलों पर अपनी छाप छोड़ी थी। इस फिल्म में दलजीत के साथ करीना कपूर, शाहिद कपूर और आलिया भट्ट जैसे कलाकारों ने काम किया था। बता दें कि इस बार का आईफा अवॉर्ड न्यूयॉर्क में आयोजित किया गया है। उड़ता पंजाब ड्रग्स पर आधारित फिल्म है।

नरगिस फाखरी का हॉट आईफा लुक

बॉलीवुड एक्ट्रेस नरगिस फाखरी अपने आईफा स्टाइल के चलते सुर्खियों में आ गई हैं । अपने बोल्ड अवतार से नरगिस सुर्खियों में हैं । उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों में नरगिस ने ब्लैक ड्रेस पहनी है। इस लुक में नरगिस बेहद खूबसूरत लग रही हैं। इसके साथ ही नरगिस ने एक और तस्वीर शेयर की। इस तस्वीर में उनकी आंखें तारीफ के काबिल लग रही हैं। बॉलीवुड की इस हसीना की ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब शेयर की जा रही हैं। बता दें कि नरगिस साल 2016 में फिल्म बैंजो में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनके साथ बॉलीवुड एक्टर रितेश देशमुख लीड रोल में थे। एक तरफ जहां आज नरगिस फाखरी का आईफा स्टाइल सुर्खियों में है।

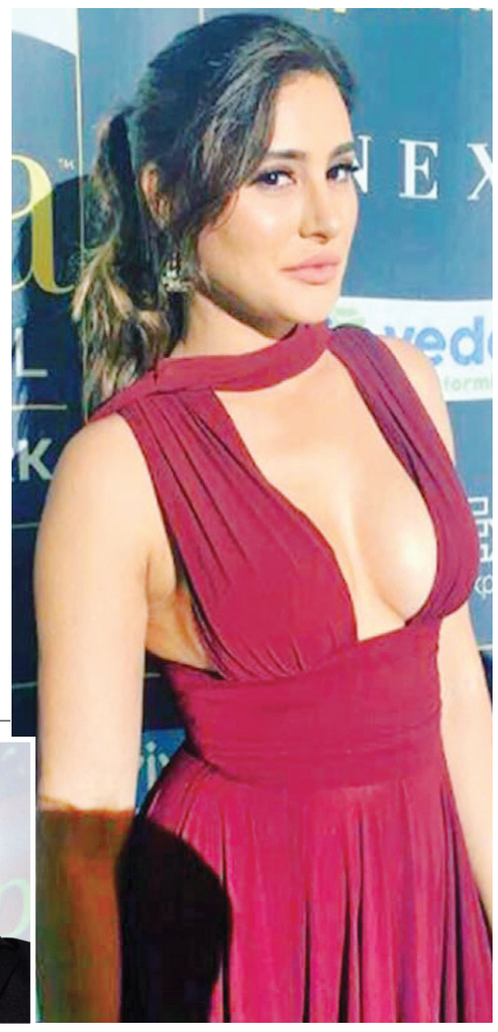

रीमेक फिल्म में काम नही करना चाहते हैं मिथुन

बॉलीवुड के जाने माने अभिनेता मिथुन चकवर्ती अपनी फिल्मों के रीमेक में काम करना नही चाहते हैं। बॉलीवुड के कई कलाकार इन दिनों रीमेक फिल्मों में काम कर रहे हैं लेकिन मिथुन चक्रवर्ती उन कलाकारों में शामिल होना नही चाहते हैं। मिथुन का कहना है कि कि उनकी कोई चाहत ही नहीं है कोई उनकी किसी फिल्म का रीमेक बनाये और वह उसमें अभिनय करें। मिथुन ने कहा, 'मैंने अपनी जिंदगी में कोई बहुत अद्भूत काम तो किया नहीं है। जितनी फिल्में की हैं, उनमें से 100 फिल्में तो ऐसी हैं जो मैं खुद नहीं देखता और अपने बच्चों को भी देखने से मना कर देता हूं। तो मैं क्यों चाहूंगा कि उन फिल्मों का फिर से रीमेक बने। मिथुन ने कहा कि उनकी कोई चाहत नहीं है कि वह फिर से अपने अभिनय किये गये किरदारों को निभाएं और उन्हें पूरा यकीन है कि लोगों को भी इसमें कोई दिलचस्पी नहीं होगी।

छोटा पर्दा

दीपशिखा की कार्बन कॉपी हैं बेटी

टीवी एक्ट्रैस दीपशिखा नागपाल सीरियल के अलावा बिग बॉस-8 की कंटैस्टेंट भी रह चुकी है। हाल ही में दीपशिखा की बेटी विधिका की कुछ फोटोज सोशल साइट पर काफी वायरल हो रही है। विधिका बिलकुल ही अपनी मां की तरह स्टाइलिश और ग्लैमरस है। दीपशिखा की 1997 में जीत उपेंद्र से की शादी हुई थी। इन दोनों के दो बच्चे बेटी विधिका और बेटा विहान। शादी के 10 साल बाद 2007 में इनका तलाक हुआ। इन फोटोज में विधिता ने ब्लैक बिकनी पहनी हुई है और वह पूल के किनारे मस्ती करते हुए नजर आ रही है। उन्होंने अपनी यह हॉट फोटोज को खुद अपने इंस्टा पर पोस्ट किया है।

जैनिफर के बचपन की फोटो सामने आई

टीवी टीरियल बेहद में माया का किरदार निभाने वाली जैनिफर विंगेट की हाल ही में बचपन की फोटो सामने आई है। इस फोटो में वह अपनी फैंडज के साथ पोज देते हुए नजर आ रही है। वैसे तो जैनिफर बहुत ही हॉट और ग्लैमरस है लेकिन इस चाइल्ड हुड फोटो में वह ऐंजल बनी हुए काफी क्यूट लग रही है। इन दिनों यह सोनी चैनल पर आ रहे बेहद में साइकोपैथ माया का लीड रोल प्ले कर रही हैं और लीप के बाद फैन्स को इनका बाल्ड लुक देखने को मिलेगा। जैनिफर ने स्टार प्लस के शो शाका लाका बूम बूम से टीवी इंडस्ट्री में डेब्यू किया था।

टेलीविजन से दूर रहना सोच समझ कर निर्णय नहीं :पूजा

कलर्स के धारावाहिकों में नया रंग, कलर्स जासूसी थ्रिलर सीरीज देव आनंद के प्रसारण के लिए पूरी तरह तैयार है। आशीष चौधरी को मुख्य किरदार निभाने की जिम्मेदारी दी गई है वहीं सुमोना चक्रवर्ती उसकी सहायक मीरा के रूप में दिखेंगी। एक और जाना पहचाना चेहरा अभिनेत्री पूजा बॅनर्जी भी धारावाहिक में शामिल होने के लिए तैयार है। पूजा महक की भूमिका निभाएंगी। महक देव आनंद की पत्नी है जो देव के व्यक्तित्व के अलग पहलू को दिखाने के लिए उसकी गंभीर एवं डार्क छवि को पूजा ने कहा, ''पिछले कुछ वर्षों से टेलीविजन से दूर रहना कोई सोच समझ कर लिया का निर्णय नहीं था।

चुटकुले

पति की पिटाई

पति जैसे ही घर पहुँचा, पत्नी ने लातों-घूँसों से पीटना शुरू कर दिया।

बुरी तरह से पिटने के बाद पति ने जब पिटाई का कारण पूछा तो

पत्नी बोली: पड़ोस वाले शर्माजी का अपनी पड़ोसन के साथ टक्कर चल रहा है ।

पति: तो उसमें मुझे क्यों पिटा तुमने ?

पत्नी: ताकि खौफ़ कायम रहे?

इन्कम टैक्स

लड़का: वाह, इतना बड़ा घर ! लड़की - हॉ, हम पैसे वाले है ।

लड़का: वाह, इतनी बड़ी कार ! लड़की - हॉ हम पैसे वाले है ।

लड़का: ओह माय गोड़, इतना सारा सोना !

लड़की : हा हम पैसे वाले है ।

लड़का : ये लो लेटर ।

लड़की : ये क्या है ?

लड़का : हम इन्कम टैक्स वाले है ।

पेट्रोल

लड़की स्कूटी में पेट्रोल भरवाने गयी ।

लड़की: भैया एक लीटर डाल दो ।

पेट्रोल वाला: ठीक है ।

लड़की: भैया कितने रूपये लीटर है पेट्रोल वाला -66.45 रुपए है मैडम ।

लड़की: भैया सही सही लगा लो वो बगल वाले तो 55 का दे रहे हैं

बेचारा पेट्रोल वाला बेहोश.. ????

हॉलीवुड

बड़ी पॉप स्टार बनना चाहती हैं कैटी

मॉडल कैटी प्राइस का कहना है कि वह एक बड़ी पॉप स्टार बनना चाहती हैं और इसके लिए किसी भी चीज को बाधा नहीं बनने देंगी। सुत्रों के अनुसार, मैं हताश पॉप स्टार हूं, लेकिन मैं अपने रास्ते में किसी चीज को बाधा नहीं बनने दूंगी। कैटी इस बात से आश्वस्त हैं कि वह भविष्य में क्रिस ब्राउन और जस्टिन बीबर जैसे गायकों के साथ काम करेंगी। फिलहाल, उनका पूरा ध्यान गायक एलेक्जेंडर ओनील के साथ काम करने पर है। कैटी ने कहा, हम दोनों ने मेरी शादी (2015 में केटी उनके पति किरेन हेलर ने अपनी शादी की कसमें दोबारा ली थीं) पर साथ मिलकर सैटर्डे लव गाया था।

ब्लैक चीना ने 25 किलो वजन कम किया

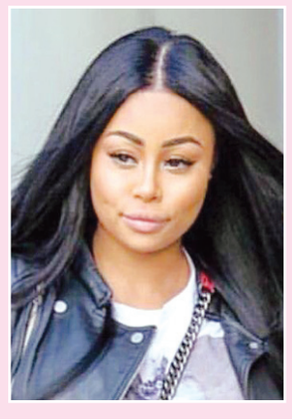

मॉडल ब्लैक चीना इन दिनों अपना वजन कम करने के लिए कठिन व्यायाम कर रही हैं और अपने इस प्रयास में प्रगति की झलक उन्होंने वीडियो और तस्वीरों के जरिए अपने प्रशंसकों के साथ साझा की है। सुत्रों के अनुसार, चीना (29) अपने दूसरे बच्चे को जन्म देने के बाद वापस छरहरी काया पाने के मिशन पर हैं। चीना ने कहा कि वह अपना वजन करीब 58.9 किलोग्राम करने के करीब हैं। उन्होंने वीडियो और तस्वीरें साझा की, जिसमें वह स्पोर्ट्स वियर पहने कठिन व्यायाम करती नजर आ रही हैं। उन्होंने लिखा, 87 किलोग्राम से 62 किलोग्राम। लक्ष्य 58.9 किलोग्राम करने का।

शानिया को था करियर खत्म होने का डर

कनाडा की बेहद लोकप्रिय गायिका शानिया ट्वैन ने खुलासा किया है कि लाइम रोग के चलते उन्हें अपना गायन करियर खत्म होने का डर सताने लगा था, क्योंकि इस रोग की वजह से उनकी गाने की क्षमता ही चली गई थी। ट्वैन ने कहा, यह बेहद कमजोर कर देने वाली बीमारी है। मैं खुशकिस्मत हूं कि इससे मेरी स्वरतंत्री की शिराएं ही प्रभावित हुई और मेरी स्वरतंत्री पर कोई असर नहीं पड़ा। वर्षो तक हाल यह रहा कि मैं बोल तो सकती थी, लेकिन चिल्ला नहीं सकती थी। उन्होंने कहा, मुझे यह भी लगता था कि अब मैं कभी अपना अल्बम नहीं बना पाऊंगी। यह एक सच्चाई थी, जो बेहद खौफनाक थी।

Readers Choice

चोर के यहां से चुराई अपनी साइकिल

फेसबुक के जरिए चोरी गई साइकिल वापस हासिल करने का एक अजीबोगरीब वाकया सामना आया है। लंदन में एक महिला ने फेसबुक की मदद से चोरी गई अपनी साइकिल चोर के यहां से वापस चुरा ली। वास्तव में साइकिल चुराने वाले ने फेसबुक पर इसे बेचने के लिए विज्ञापन डाला था। रिपोर्ट के अनुसार, ब्रिस्टल की रहने वाली साइकिलिस्ट जेनी मॉर्टन हम्फ्रीज ने फेसबुक पर अपनी चोरी गई साइकिल की तस्वीर शेयर कर मदद की अपील की थी। संयोग से उनकी साथी साइकिलिस्ट ने जब फेसबुक पर बेचने के लिए लगाई गई साइकिलों की खोज-पड़ताल की तो उन्हें वहां जेनी की साइकिल दिख गई। इसके बाद दोनों ने बिक्रीकर्ता से वह साइकिल खरीदने की योजना बनाई। मॉर्टन हम्फ्रीज ने कहा, ''मैंने कुद को साइकिल खरीदार दिखाया और साइकिल से जुड़े कुछ अनाप-शनाप सवाल किए। मैंने खरीदने से पहले साइकिल चलाकर देखने का अनुरोध किया।'' बेचने वाले ने उन्हें साइकिल चलाकर देखने की इजाजत दे दी और महिला टेस्ट राइड के लिए निकली तो साइकिल लेकर सीधे घर चली आई। बेचने से पहले चोर ने साइकिल में हल्की-फुल्की खराबियों की मरम्मत भी करवा दी।

बंगला सिनेमा को पहचान दिलाई कानन ने

पुण्यतिथि

भारतीय सिनेमा जगत में कानन देवी का नाम एक ऐसी शख्सियत के तौर पर याद किया जाता है जिन्होंने न सिर्फ फिल्म निर्माण की विद्या से बल्कि अभिनय और पार्श्वगायन से भी दर्शको के बीच अपनी खास पहचान बनायी। कानन देवी मूल नाम काननबाला का जन्म पश्चिम बंगाल के हावड़ा में 1916 को एक मध्यम वर्गीय बंगाली परिवार में हुआ था। बचपन के दिनों में ही उनके पिता की मृत्यु हो गयी। इसके बाद परिवार की आर्थिक जिम्मवारी को देखते हुये कानन देवी अपनी मां के साथ काम में हाथ बंटाने लगी।

पहली हिट फिल्म मां

कानन देवी जब महज 10 वर्ष की थी तब अपने एक पारिवारिक मित्र की मदद से उन्हें ज्योति स्टूडियो द्वारा निर्मित फिल्म जयदेव में काम करने का अवसर मिला। इसके बाद कानन देवी को ज्योतिस बनर्जी के निर्देशन में राधा फिल्मस के बैनर तले बनी कई फिल्म में बतौर बाल कलाकार काम करने का अवसर मिला। वर्ष 1934 में प्रदर्शित फिल्म 'मां' बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने करियर की पहली हिट फिल्म साबित हई। कुछ समय के बाद कानन देवी न्यू थियेटर में शामिल हो गयी। इस बीच उनकी मुलाकात राय चंद बोराल से हुई जिन्होंने कानन देवी को हिंदी फिल्मों में आने का प्रस्ताव दिया।

अभिनय के साथ पार्श्वगायक की भूमिका निभाई

तीस और चालीस के दशक में फिल्म अभिनेता या अभिनेत्रियों को फिल्मों में अभिनय के साथ ही पार्श्वगायक की भूमिका भी निभानी होती थी जिसको देखते हुए कानन देवी ने भी संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी। उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा उस्ताद अल्ला रक्खा और भीष्मदेव चटर्जी से हासिल की। इसके बाद उन्होंने अनादी दस्तीदार से रवीन्द्र संगीत भी सीखा। वर्ष 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'मुक्ति' में बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने करियर की सुपरहिट फिल्म साबित हुई। पी.सी.बरूआ के निर्देशन में बनी फिल्म की जबरदस्त कामयाबी मिली।

कई सफल फिल्मों का किया निर्माण

वर्ष 1942 में प्रदर्शित फिल्म जवाब बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने करियर की सर्वाधिक हिट फिल्म साबित हुई। इस फिल्म में उनपर फिल्माया यह गीत 'दुनिया है तूफान मेल उन दिनों श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। इसके बाद कानन देवी की हॉस्पिटल, वनफूल और राजलक्ष्मी जैसी फिल्में प्रदर्शित हुई जो टिकट खिड़की पर सुपरहिट साबित हुई। वर्ष 1948 में कानन देवी ने मुंबई का रूख किया। इसी वर्ष प्रदर्शित चंद्रशेखर बतौर अभिनेत्री कानन देवी की अंतिम हिंदी फिल्म थी। फिल्म में उनके नायक की भूमिका अशोक कुमार ने निभायी। वर्ष 1949 में कानन देवी ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी कदम रख दिया।

दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित

वर्ष 1976 में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कानन देवी के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुये उन्हें फिल्म जगत के सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कानन देवी बंगाल की पहली अभिनेत्री बनीं जिन्हें यह पुरस्कार दिया गया था। उनकी अभिनीत उल्लेखनीय फिल्मों में 'जयदेव', 'प्रललाद', 'विष्णु मायां', 'मां, 'हरि भक्ति', 'कृष्ण सुदामां', 'खूनी कौन', 'विद्यापति', 'साथी, 'स्ट्रीट सिंगर', 'हारजीत', 'अभिनेत्री', 'परिचय', 'लगन कृष्ण लीलां', 'फैसलां', 'देवत्र', आशां आदि शामिल हैं। उनकी फिल्मों में कुछ है वामुनेर में, अन्नया, मेजो दीदी, दर्पचूर्ण, नव विद्यान, देवत्र, आशा, आधारे आलो, राजलक्ष्मी, ओ श्रीकांता, इंद्रनाथ, श्रीकांता औ अनदादीदी,अभया ओ श्रीकांता। पार्श्वगायन और अभिनय के जरिये दर्शको के बीच खास पहचान बनाने वाली कानन देवी 17 जुलाई 1992 को इस दुनिया को अलविदा कह गईं।